ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पावक श्रुधी हवम्। सामवेद 29
हे सबको पवित्र करने वाले प्रभो ! हमारी पुकार को सुनो।
O God ! the Purifier of all ! Listen to our invocation.

वर्ष 39, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 दिसम्बर, 2015 से रविवार 20 दिसम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य जनता में महाशोक : आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामंत्री श्री राजीव आर्य जी का निधन

आर्य संगठन की अपार क्षति– महाशय धर्मपाल, प्रधान

एक हंसता हुआ चेहरा चला गया – आर्यजनों ने दी अश्रुपूरित नेत्रों से विदाई

जन्म - 30.11.1962 मृत्यु - 13.12.2015

आर्यजगत को रोशन करने वाला दीप अचानक बुझ गया

आर्य समाज के कर्मठ नेता, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के युवा महामंत्री, मृदु भाषी श्री राजीव आर्य जी का दिल्ली में एक सड़क दुर्घटना के दौरान लगने वाले आघात से 13 दिसम्बर 2015 को प्रातः 5 बजे गुड़गांव के मेदांता हस्पताल में दु:खद निधन हो गया। वे 53 वर्ष के थे।

11 दिसम्बर शुक्रवार को दिल्ली से गुड़गांव जाते हुए उनका वाहन दुर्घटना ग्रस्त हुआ। उन्हें कोई बाहर चोट नहीं आई, अपितु शरीर में काफी दर्द का अहसास हुआ। तुरंत हस्पताल में ले जाया गया। एक बार तो हस्पताल ने उन्हें चैक करके घर वापस भेजने के लिए कह दिया। किन्तु तेज दर्द के चलते वे घर नहीं गए। 12 दिसम्बर को दोपहर अचानक तबीयत बिगड़ी और बस काल ने अपना विकराल रूप दिखाया और हम सब कुछ कर न सके। 13 दिसम्बर की प्रातः 5 बजे वे इस संसार को हमेशा के लिए विदा कह गए।

आर्य जगत को रोशन करने वाला

...शेष पेज 4 पर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा आयोजित आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज ने दिलाया भारत को विश्व गुरु का दर्जा-मनोहर लाल, मुख्यमंत्री हरियाणा

महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश आचार्य देवव्रत ने युवाओं को दिलाएं संकल्प

नशामुक्ति, चरित्र निर्माण, भ्रूण हत्या, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, दहेज उन्मूलन, गौ रक्षा एवं देश भक्ति से जुड़ने का किया आह्वान

आर्य महासम्मेलन का शुभ आरम्भ प्रातः यज्ञ से आरम्भ हुआ जिसे ब्रह्मा स्वामी धर्मदेव जी, आचार्य अभय आर्य निदेशक आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत, श्री कर्मवीर मेधार्थी, जगदीश चहल व संदीप आर्य रहे।

डॉ. देवव्रत जी महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश व मुख्यमन्त्री मनोहरलाल खट्टर जब सम्मेलन स्थल पर पहुँचे तो उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। सभाप्रधान आचार्य विजयपाल, सभामन्त्री मा. रामपाल आर्य, सम्मेलन के संयोजक आचार्य योगेन्द्र आर्य, सह-संयोजक सर्वमित्र आर्य व प्रबन्धक आजादसिंह आर्य श्री कन्हैयालाल कोषाध्यक्ष ने पगड़ी पहनाकर उनका स्वागत किया। आचार्य बलदेव जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, सभाप्रधान आचार्य विजयपाल, सभामन्त्री मा. रामपाल आर्य, श्री कन्हैयालाल कोषाध्यक्ष ने उनको आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से स्मृतिचिह्न भेंट किया।

मंच का संचालन आर्य युवा महासम्मेलन के संयोजक आचार्य योगेन्द्र आर्य ने किया तथा आचार्य सर्वमित्र आर्य व आजादसिंह आर्य उनके सहयोगी रहे। महासम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. देवव्रत आचार्य महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश व मुख्य अतिथि श्री मनोहरलाल खट्टर हरियाणा सरकार ने आये हुए बीस हजार से अधिक युवक -युवतियों को सम्मेलन में प्रस्तुत विषयों द्वारा यज्ञ व स्वच्छता अभियान, नशामुक्ति, चरित्र-निर्माण, आर्य मान्यताएं, भ्रूणहत्या, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, दहेज उन्मूलन, गोरक्षा एवं देशभक्ति से जुडने का आह्वान करते हुए उन्हें शपथ दिलाई। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने भी अपना उद्बोधन दिया।

इस आर्य महासम्मेलन की विशेषता यह रही कि इसमें संयोजक, सहसंयोजक,

...शेष पेज 5 पर

स्वाध्याय

अमरता!

जुहुरे वि चितयन्तोऽनिमिषं नृण्णं पान्ति। आ दृळ्हां पुरं विविशुः।।
-ऋ. 5/19/2
ऋषिः-आत्रेयो वव्रिः।। देवता-अग्निः।। छन्दः-गायत्री।।

विनय- एक नगरी है जो कि बिल्कुल दृढ़ है, अभेद्य हे, इसमें पहुंच जाने पर हम पर किसी भी शत्रु का आक्रमण सफल नहीं हो सकता। क्या कोई उस स्थान पर पहुंचना चाहता है? वहां पहुंचने का मार्ग कुछ विकट है, कड़ा है, आसान नहीं है, वहां पहुंचनेवालों को ज्ञानपूर्वक स्वार्थ-त्याग करते जाना होता है और सदा जागते हुए अपने 'नृम्णा' की-आत्म-बल की रक्षा करते रहना होता है, ये दो साधनाएं साधनी होती हैं। कई लोग अपने कर्त्तव्य व उद्देश्य का विचार किये बिना यूंही जोश में आकर 'आत्म-बलिदान' कर डालते हैं। ऐसा करना आसान है, परंतु यह सच्चा बलिदान नहीं होता। इससे यथेष्ट फल नहीं मिलता। इस पवित्र उद्देश्य के सामने अमुक वस्तु वास्तव में तुच्द है, इसलिए अब इस वस्तु को स्वाहा कर देना मेरा कर्त्तव्य है- इस प्रकार के स्पष्ट ज्ञान के साथ, बिना किसी जोश के, वे आत्म-बलिदान के नाम से आत्मघात कर रहे होते हैं। वहां पहुंचने के लिए तो आत्मा का घात नहीं, किन्तु आत्मा की रक्षा करनी होती है। हम लोग ,प्रायः क्रोध करके, असत्य बोलकर, इन्द्रियों को स्वच्छन्द भोगों में दौड़ाकर अपना आत्म-तेज, आत्मवीर्य, आत्मबल खोते रहते हैं, परन्तु वे पुरुष अपने इस 'नृम्ण'-आत्मबल की बड़ी सावधानी से, सदा जागरूक रहते हुए, बड़ी चिन्ता से, रक्षा करते हैं। वे पल-पल में अपनी मनोगति पर भी ध्यान रखते हुए देखते रहते हैं कि कहीं अन्दर कोई आत्मबल का क्षय करने वाला काम तो नहीं हो रहा हैं एवं रक्षा किया हुआ आत्मबल ही उस दृढ़ पुरी में पहुंचानेवाला है। वास्तव में ये दोनों साधनाएं एक ही हैं, यदि हम इनके इस सम्बन्ध पर विचार करें कि ऐसे लोग आत्मबल की रक्षा करने के लिए शेष प्रत्येक वस्तु का बलिदान करने से उद्यत रहते हैं और ये सदा इतने सत्य के साथ आत्मबलिदान करते जाते हैं कि उनके प्रत्येक आत्मबलिदान का फल यह होता है कि उनका बात्मबल बढ़ता है। आओ! हम भी आत्महवन करते हुए आत्मबल की रक्षा करते हुए चलने लगें और उस मार्ग के यात्री हो जाएं जो अभयता, अजातशत्रु, अमरता और अभेद्यता की दृढ़ पुरी में पहुंचाने वाला है।

शब्दार्थ- जो **वि चितयनतो जुहुरे**-ज्ञानपूर्वक स्वार्थ-त्याग करते हैं और **अनिमिषं नृम्णं पान्ति**-लगातार जागते हुए, अपने आत्मबल की रक्षा करते रहते हैं **ते**-वे **दृळहां पुरम्**-दृढ़-अभेद्य नगरी में **आविविशुः**-प्रविष्ट हो जाते हैं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

कहीं अगला शिकार आप तो नहीं?

9 दिसम्बर *कर्नाटक में टीवी के माध्यम से एस्ट्रोलोजी (ज्योतिश शास्त्र) की जानकारी प्राप्त करने वाले जल्द ही इससे महरूम हो सकते हैं। राज्य की कांग्रेस सरकार एस्ट्रोलोजी पर आधारित टीवी शो पर जल्द ही रोक लगाने का विचार बना रही है। सूत्रों के अनुसार सरकार का मानना है कि इन टीवी शो को देखकर लोगों में अन्धविश्वास की भावना बढ़ती जा रही है। बेंगलुरू में एक कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने कहा कि हर टीवी चैनल एस्ट्रोलोजी आधारित शो प्रसारित कर रहा है। हर कोई एस्ट्रोलोजी शो देखकर अपनी दिनचर्या को आगे बढ़ाने में लग गया है, इससे मेरा घर भी अछूता नहीं रहा है। अब समय आ गया है कि इस पर रोक लगायी जाए। हालाँकि जानकारों का मानना है कि ऐसा करना सरकार के लिए कठिन होगा।*

अब हम इस मामले को यदि गंभीरतापूर्वक लेकर देखें तो आज लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ मीडिया को समाज में जागरूकता फैलाने, अन्धविश्वास और कुरीतियों का खात्मा करने और साक्षरता का प्रचार-प्रसार करने की भूमिका के रूप में देखा जाता है लेकिन वर्तमान समय में मीडिया अपनी इस भूमिका का कितना निर्वहन कर रहा है ये हम सब जानते हैं।

कोई भी टीवी चौनल चला लें डरावना सा रूप धारण किये हुए बाबा दर्शकों को शनि, राहु, केतु, गृह दोष, मंगल दोष और न जाने कैसे कैसे दोषों से डराते हुए और लाकेट, धन लक्ष्मी वर्षा यन्त्र, लक्ष्मी कुबेर यन्त्र, इच्छापूर्ति कछुआ, लाल किताब. गणपति पेंडेंट, नजर रक्षा कवच आदि की दुकान लगाकर बैठे मिल जायेंगे जो कोडियों के दाम की चीजों को महंगे दामों पर बेच कर अपनी जेबें भर रहे हैं। इसके अलावा फोन और एस. एम. एस. के जरिये समस्याओं का समाधान बताने के बहाने मोटी-मोटी रकमें कवचों-यत्रों के नाम पर चार्ज कर रहे हैं।

आज हर आम आदमी किसी ना किसी समस्या से जूझ रहा है। बस इसी बात का फायदा उठाकर अन्धविश्वास की अपनी दुकान चलाने के लिए मीडिया का सहारा लिया जा रहा है क्योंकि मीडिया ही एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिये कोई भी बात सीधे-सीधे लाखों करोड़ों लोगों तक पहुंचाई जा सकती है और मीडिया के जरिये किसी भी बात को दिमाग में अच्छे से बैठाया भी जा सकता है।

पत्र-पत्रिकाएं भी ऐसे विज्ञापनों को धड़ल्ले से छाप रही है। मुझे समझ नहीं आता कि प्यार में असफल व्यक्ति को कोई ज्योतिष या तांत्रिक उसका प्यार कैसे दिला सकता है "निःसंतान दंपत्ति को अगर ऐसे बाबा या तांत्रिक के उपाय अपनाने पर ही संतान मिल जाती है तो फिर मेडिकल की पढ़ाई की क्या जरुरत है" अगर कोई यन्त्र खरीदकर रातोंरात अमीर बन सकता है तो फिर सुबह से रात तक आफिस में सर खपाने की क्या जरुरत है?

कुल मिलाकर दुखी, हारे हुए और परेशान लोगों को ठगने का एक बड़ा जाल फैलाया जा चुका है जिसकी चपेट में फँस कर कई लोग अपनी जेबें खाली करवा रहे हैं। जिसका एक बडा हिस्सा मीडिया की जेब में भी जाता है अन्धविश्वास के अधिकांश मामलों में हमने देखा है कि साक्षर और निरक्षर दोनों तबके के लोग आसानी से शिकार हो जाते है व्यापार जहाँ तनिक धीमा हुआ एकदम से लोग किसी बाबा की सलाह के लिए उकसाते हैं। 21वीं सदी में भी भारतीय लोग चमत्कार की आस में जीकर प्रत्यन न कर यन्त्र आदि के जाल में उलझे रहते हैं जबकि सब जानते हैं और इन सबका मौखिक रूप से विरोध भी करते हैं किन्तु अंतर्मन में कहीं न कहीं किसी चमत्कार की आस में जीते हैं और इसी का फायदा उठाते हुए आज इन यंत्र कारोबारियों ने कई करोड़ का व्यापार कर लिया है अब फैसला आप लोगों को करना है कि आज यूरोपीय देश हमसे इतना आगे क्यों है ?

-सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

अनुभ्रमोच्छेदन

प्रश्न 1: 'भ्रमोच्छेदन' के बाद अब यह 'अनुभ्रमोच्छेदन' कौन-से ग्रन्थ नाम है?

उत्तर: जैसा कि 'भ्रमोच्छेदन' ग्रन्थ के परिचय में बताया गया है कि महर्षि ने राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द के 'निवेदन पत्र' के उत्तर में 'भ्रमोच्छेदन' ग्रन्थ की रचना की थी। अब इसके उत्तर में राजा शिवप्रसाद जी ने पुनः 'द्वितीय निवेदन' नामक पुस्तक प्रकाशित की, जिसके उत्तर में यह 'अनुभ्रमोच्छेन' नामक ग्रन्थ लिखा गया।

प्रश्न 2. इस ग्रंथ की रचना कब हुई?

उत्तर: इस ग्रन्थ की रचना संवत् 1937, फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की तिथि 4 बृहस्पतिवार के दिन की गई।

प्रश्न 3: कुछ लोगों का कहना है कि यह ग्रन्थ महर्षि द्वारा नहीं लिया गया, क्योंकि इस ग्रन्थ के कुछ संस्करणों के मुख पृष्ठ तथा अन्त में पं. भीमसेन शर्मा का नाम छपा हुआ है।

उत्तर: ग्रन्थ की रचना शैली एवं ऋषि दयानन्द के 21 अक्टूबर 1880 के पत्र से ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ स्वयं महर्षि ने ही लिखवाया था। इसका हस्तलेख भी परोपकारिणी सभा, अजमेर में सुरक्षित है, जिस पर अनेक स्थानों पर ऋषि के हाथों से संशोधन किये गये हैं। कुछ अपरिहार्य कारणों से ऋषि के नाम का उल्लेख नहीं हो सका।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

जयपुर में राष्ट्रीय पुस्तक मेला आयोजित

जयपुर में 28 नवंबर से 06 दिसम्बर, 2015 तक राष्ट्रीय पुस्तक मेला - 2015 लगाया गया, जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा भी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य वीर दल के विशेष सहयोग से स्टाल लगाकर वेदप्रचार किया गया, सत्यार्थ प्रकाश और आर्ष साहित्य की रही धूम। यह आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

गाय हमारी माता है...गौ–हत्या बंद हो

देश में (बीफ) गौ मांस के नाम पर जो भ्रम फैलाया जा रहा है, क्या है उसकी वास्तविकता ?

1. भारत में धार्मिक मान्यताओं के कारण एक बहुत बड़ा वर्ग (गाय) को माँ स्वरूप पूजनीय मानता है जैसे गंगा नदी को और तुलसी के पौधे को भी माँ स्वरूप माना जाता है।

2. वैज्ञानिक भी गाय के दूध, गौमूत्र, गाय के गोबर में औषधीय गुण की चर्चा करते है। (आयुर्वेद) में इसके प्रमाण मिलते है।

3. आदि काल से ही गाय भारत में पूजनीय है, इसके प्रमाण भारत के विभिन्न ग्रंथो में मिलते है।

समान्यता जो चीजें (जीव – निर्जीव) पूजनीय हो जाती है उसका निरादर व प्रतिकार करना विवाद खड़ा करता ही है। इसमें आप गुरु (किसी भी रूप में), धार्मिक ग्रंथो, पेड़– पौधे, पशु–पक्षी आदि को मान्यता अनुसार देख सकते हो। हालांकि इस विषय पर अनेको लोगों ने अपनी अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का प्रकटीकरण भी किया है। सामाजिक, धार्मिक, विभिन्न मान्यताओं के बुद्धि जीवी वर्ग और मुख्यत: राजनितिक संस्थायें इसके पक्ष और विपक्ष में आ रही हैं। इसे भारत सरकार द्वारा आहार की स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध लगाने जैसी झूठी बातों से भी जोड़ा जा रहा है। हो सकता है कुछ लोग राजनितिक फायदा लेना चाहते हो। पर सत्य कुछ और है।

गौ हत्या का विरोध पुराना जीवंत धार्मिक मुद्दा है और इतिहास गवाह है इसके लिये पूर्व में कितने ही आंदोलन हो चुके हैं।

गौ के प्रति सम्मान का उदाहरण भारत की आजादी की पहली लड़ाई अर्थात् 1857 के विद्रोह में भी मिलता है जब मंगल पाण्डेय ने गाय की चर्बी लगे कारतूस लेने से मना करके ब्रिटिश शासन का विरोध किया और यह आजादी की लड़ाई में बहुत ही साहसी व क्रांतिकारी कदम माना गया। हालाँकि इस क्रांति को दबाने में अंग्रेज सफल हुये पर धार्मिक भावनाओ को आहत करके अंग्रेजो ने भारत के आस्तिक समाज में प्रतिशोध की ज्वाला को तो जन्म दे ही दिया था । आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी गौ रक्षा हेतु अनेकों आंदोलन किये। भारत के अनेको साधु संतो ने गौ रक्षा हेतु आमरण अनशन किये। स्वतंत्रता सेनानी और भारत के महान संत प्रभु दत्त ब्रह्मचारी ने गौ रक्षा आंदोलन की अगुवाई करने के साथ राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ के दूसरे सर संघचालक

...भारत से होने वाले (बीफ) के निर्यात को लेकर काफी भ्रम फैलाया गया कि सरकार बीफ (गौ मांस) के निर्यात का समर्थन करती है लेकिन भारत से निर्यात होने वाला बीफ दरअसल गौ मांस है ही नहीं, वह भैंस का मांस है। भारत सरकार ने पुन: स्पष्ट किया है भारत से गौ मांस का निर्यात प्रतिबंधित है।...

गुरूजी के कहने पर 1951 के प्रथम लोकसभा चुनाव में इलाहाबाद लोकसभा क्षेत्र से जवाहर लाल नेहरू को गौ रक्षा तथा हिन्दू कोड बिल के मुद्दे पर खुली चुनौती देकर हिला दिया।

2014 के आम चुनाव में गौ हत्या प्रतिबन्ध को बीजेपी ने चुनावी घोषणा पत्र में शामिल किया और अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। मोदी सरकार इस विषय पर संवेदनशील है, एक सख्त कानून बनाने के लिये प्रतिबंध भी है पर राज्यसभा में पूर्ण बहुमत न होने की वजह से इस विषय पर थोड़ा विलंब होना तय है पर निसंदेह राज्य सरकारों के माध्यम से यह प्रयास शुरू हो चुका है, उदाहरण स्वरूप हरियाणा व महाराष्ट्र सरकार ने हाल ही में गौ हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने वाला सख्त कानून बनाकर गौ माता की रक्षा हेतु वचन बद्धता दोहराई है। सरकार किसी भी प्रकार के आहार विरोध में नहीं है और होना भी नही चाहिये पर भारत की धार्मिक मान्यताओं के कारण गौ माता को आहार न बनाया जाये इसका सकारात्मक प्रयास वर्तमान सरकार की प्रमुखता होनी ही चाहिए।

दुर्भाग्यवश आघदी के बाद से ही बहुसंख्यक समाज की मान्यताओं की चिन्तायें अल्पसंख्यक समाज की मान्यताओं की चिन्ताओं के आगे विगत राजनीतिज्ञों और बुद्धिजीवियों के द्वारा दबा दी गयी। जो असवैंधानिक और निराशाजनक भी है। आज भी यह प्रयास चालू है और अब इस कु त्य में दूषित मीडिया भी अपना योगदान दे रही है। हाल ही में कुछ राजनेताओं और बुद्धिजीवियों द्वारा रोड पर बीफ खाना ,भारत की मान्यताओं को संजोय कर रखने वाले समाज के लिये (चिह्न) और (अपमानित) करने जैसा प्रतीत होता है। जिसकी निंदा जरूरी है। हालांकि संवैधानिक रूप से ये लोग सुरक्षित है क्यों की भारत में बीफ की परिभाषा में गौ वंश के साथ साथ भैंस

असंवैधानिक आदि को भी साजिश के तहत अंदर किया गया। जिससे वो इसी परिभाषा के आड़ में गौ मांस खा सके (क्योंकि ज्यादातर राज्यों में गौ आहार पर अलग–अलग स्तर की, रोक लागू है और जानबूझ कर कानून का उलंघन होता है वो भी कानून के संरक्षण में)। वैसे भी इन महानुभावों को भारत की मान्यताओं की चिंता नहीं है, चिंता है तो केवल अपने आहार की स्वतंत्रता की।

किसी भी शब्दकोष में बीफ का मतलब गौ मांस ही है। अब देश में भ्रम फैलाया जा रहा है और कहां जा रहा है कि केंद्र सरकार आहार की स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध लगा रही है जबकि ये असत्य है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में भिन्न भिन्न प्रकार के आहार है जो वहाँ की प्रकृति के अनुरूप ही है और उसका कहीं कोई विरोध भी नहीं है। व्यक्ति को स्वयं ही सोचना है की उसे कैसा आहार करना है पर परम्पराओं और मान्यताओं को आहत कर के करा गया आहार विष के सामान ही है। और ये सामाजिक और धार्मिक भावनाओं को आहत करने जैसा कुकृत्य है। इसलिये संविधान में इस विषय पर और अधिक सख्ती की जरुरत है क्योंकि गो–हत्या पर कोई केंद्रीय कानून नहीं है।

बीबीसी की एक रिपोर्ट्स के अनुसार–

गो–हत्या पर पूरे प्रतिबंध के मायने हैं कि गाय, बछड़ा, बैल और सांड की हत्या पर रोक. ये रोक 11 राज्यों भारत प्रशासित कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, और दो केन्द्र प्रशासित राज्यों – दिल्ली, चंडीगढ़ में लागू है।

गो–हत्या कानून के उल्लंघन पर सबसे कड़ी सजा भी इन्हीं राज्यों में तय की गई है. हरियाणा में सबसे ज्यादा एक लाख रुपए का जुर्माना और 10 साल की जेल की सजा का प्रावधान है। वहीं महाराष्ट्र में गो–हत्या पर 10,000 रुपए का जुर्माना और पांच साल की जेल की सजा है.

आंशिक प्रतिबंध

गो–हत्या पर पूरे प्रतिबंध के मायने हैं कि गाय और बछड़े की हत्या पर पूरा प्रतिबंध लेकिन बैल, सांड और भैंस को काटने और खाने की इजाजत है. इन सभी राज्यों में सजा और जुर्माने पर रुख भी कुछ नरम है. जेल की सजा छह महीने से दो साल के बीच है जबकि जुर्माने की अधिकतम रकम सिर्फ 1,000 रुपए है। आंशिक प्रतिबंध आठ राज्यों बिहार, झारखंड, ओडिशा, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, गोवा और चार केंद्र शासित राज्यों दमन और दीव, दादर और नागर हवेली, पांडिचेरी, अंडमान ओर निकोबार द्वीप समूह में लागू है।

कोई प्रतिबंध नहीं

दस राज्यों – केरल, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड, त्रिपुरा, सिक्किम और एक केंद्र शासित राज्य लक्षद्वीप में गो–हत्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है. यहां गाय, बछड़ा, बैल, सांड और भैंस का मांस खुले तौर पर बाजार में बिकता है और खाया जाता है।

आठ राज्यों और लक्षद्वीप में तो गो–हत्या पर किसी तरह को कोई कानून ही नहीं है। असम और पश्चिम बंगाल में जो कानून है उसके तहत उन्हीं पशुओं को काटा जा सकता है जिन्हें 'फिट फार स्लाटर सर्टिफिकेट' मिला हो।

भारत से होने वाले (बीफ) के निर्यात को लेकर काफी भ्रम फैलाया गया की सरकार बीफ (गौ मांस) के निर्यात का समर्थन करती है लेकिन भारत से निर्यात होने वाला बीफ दरअसल गौ मांस है ही नहीं, वो भैंस का मांस है। भारत सरकार ने पुन: स्पष्ट किया है भारत से गौ मांस का निर्यात प्रतिबंधित है।

प्रदेशों के असमान कानून के कारण और बीफ शब्द की विवादित परिभाषा के कारण देश में भ्रम की स्थिति फैलाई जा रही है जो देश की वर्तमान सरकार को अकारण बदनाम करने का एक प्रायोजित षड्यंत्र लगता है। देश की आर्थिक प्रगति व सबका साथ – सबका विकास जैसे विषयों पर प्रतिबद्ध केंद्र सरकार को गो– हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध पर संसद में सख्त कानून लाना चाहिये, जिसे सभी राज्यो को मानना बाध्य होगा तभी गौ माता की हम सच्ची रक्षा कर पाएंगे।

–शैलेश भारद्वाज

बिछुड़ गया मित्रता का जोड़ा

स्व. श्री राजीव आर्य जी

यूं तो मेरा परिचय स्व. श्री राजीव आर्य जी से वर्षों पुराना है। जब मैं आर्य वीर दल में संचालक था या यूं कहें कि उससे भी पूर्व जब मैं आर्यवीर ही था, तब आर्यसमाज पंजाबी बाग में उनके सम्पर्क में आया। वे एक अत्यन्त मृदु स्वभाव के हंसमुख व्यक्तित्व थे। उनका स्वभाव किसी के भी हृदय में अपना स्थान बनाने के लिए पर्याप्त था। वे महर्षि दयानन्द को समर्पित व्यक्त्वि थे। अपने पिता श्री ईश्वर चन्द्र आर्य एवं माता श्रीमती कमलेश आर्य जी की पांचवी सन्तान के रूप में जन्में श्री राजीव आर्य जी मेरी धनिष्ठता अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2006 से एक-दो वर्ष पूर्व ही हुई। उस समय वे आर्यसमाज पंजाबी बाग के अधिकारी थे और मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का महामन्त्री।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2006 में यज्ञशाला की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री राजीव आर्य जी एवं उनके भाई श्री योगेश आर्य तथा आर्यसमाज के अन्य पदाधिकारियों ने मिलकर सम्भाली और क्या उसका वर्णन करना असम्भव है। महासम्मेलन में उनकी भूमिका को कोई चाह कर भी भुला नहीं पाएगा।

उनके आर्यसमाज के प्रति समर्पण को दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की केन्द्रीय संस्था आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामन्त्री का कार्यभार महाशय धर्मपाल जी के प्रधानत्व में उन्हें प्रदान किया गया।

श्री राजीव आर्य जी में अद्‌भुत नेतृत्व क्षमता थी, वे प्रत्येक व्यक्ति को अपने साथ लेकर चलते थे। आर्यसमाज की संगठन शक्ति को वे भलिभांति जानते-समझते थे। आर्यसमाज के उत्सवों में वे सदैव प्रशंसा के पात्र रहे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सभी कार्यक्रमों में वे परिवार सहित न केवल उपस्थित होते थे अपितु अपने लिए जिम्मेदारियां भी निर्धारित कराने के साथ-साथ सभी व्यवस्थाओं में पूर्ण सहयोगी बनते थे।

मैं और श्री राजीव जी जल के मिश्रण की भांति थे, जिनके विचारों में कोई भिन्नता नहीं थी, लक्ष्य एक ही थे। हम एक ही पथ के पथिक थे जिनका लक्ष्य संगठन का संगठित करना और किसी भी प्रकार से उसमें ऊर्जा को संचारित करना ही था। जब संगठन के लिए साथ बैठे तो पता ही नहीं चलता था कि कब रात हुई - कब दिन निकला। इतनी एकता, इतना विश्वास, इतना भरोसा कि जैसे दो शरीर एक आत्मा।

आज लगा कि जैसे हम सब टूट गये। शरीर मानो लग ही नहीं रहा था कि है। किन्तु परमात्मा की नियति और प्रकृति का नियम कौन बदल सकता है। हमारा भी एक ऐसा ही जोड़ा था। आज परमात्मा की व्यवस्थानुसार एक मित्रता का संबंध बिछुड़ गया है श्री राजीव आर्य जी की आत्मा रूपी हंस अकेला उड़ गया है। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को अपने श्रीचरणों में विश्राम दें तथा हमें मिलजुलकर उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने की शक्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करें ऐसी कामना है।

-विनय आर्य

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य जनता में ...

यह दीप अचानक सबके देखते-देखते ही सदा के लिये बुझ गया। समाचार सुनते ही समस्त आर्य जगत में शोक की लहर दौड़ गयी। श्री राजीव आर्य अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पूजा आर्य एवं 22 वर्षीय पुत्र श्री ऋषभ आर्य को छोड़ गये हैं। 14 दिसम्बर 2015 को पंजाबी बाग स्थित एसएम आर्य पब्लिक स्कूल से उनकी अंतिम यात्रा हजारों अश्रुपुरित नेत्रों के साथ आरंभ हुई जो 11 बजे शमशान घाट पर अपने प्रिय के अंतिम दर्शनों के लिए अथाह जन समूह उमड़ पड़ा। श्री राजीव आर्य की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा दिनांक 17 दिसम्बर 2015 गुरुवार को एम.एम. पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग प्रांगण में आयोजित की गई।

डेरा गाजी खान जिला तोशां (वर्तमान पाकिस्तान) निवासी वैदिक संस्कारों के प्रणेता श्री ईश्वर चन्द आर्य जी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कमलेश आर्यजी को साथ लेकर दिल्ली पधारे। दिल्ली में आते ही आप आर्य समाज की सेवा में तन-मन-धन से जुट गये और शक्ति नगर व गुडमण्डी में रहते हुए आर्य समाज बिड़ला लाईस के सदस्य व पदाधिकारी बने। कुछ समय पश्चात् आप पंजाबी बाग स्थानान्तरित हो गये और वहीं पर आपने अपना स्थाई निवास बनाया। माता श्रीमती कमलेश आर्य जी ने पांच पुत्रों श्री विजय आर्य, श्री विनय आर्य, श्री योगेश आर्य, श्री राजेश आर्य और 30 नवम्बर 1962 को सबसे छोटे पुत्र श्री राजीव आर्य को जन्म दिया। श्री राजीव आर्य के चाचाश्री ओम प्रकाश आर्य भी आपके परिवार के साथ रहते थे। श्री राजीव आर्य अपने पांचों भाईयों के साथ हंसते खेलते बड़े हुए और धीरे-धीरे आप भी अपने पिता की भांति आर्य समाजी विचारधारा में बहते हुए दिल्ली की अनेक आर्य समाजों से जुड़ गये। जिसमें आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के विशिष्ठ सदस्य, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के मंत्री, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कोषाध्यक्ष, एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग के चेयरमैन एवं रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल के चेयरमैन थे।

आर्य सन्देश परिवार श्री राजीव आर्य जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता है कि शोक संतप्त परिवार को इस अपार दुख को वहन करने की शक्ति प्रदान करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की पेशकश वैदिक गीतों-भजनों को बनाएं अपनी मोबाईल कॉलर ट्यून

Aayi Fauz Dayanandwali

Download this song on your mobile as Caller Tune

airtel	Set Tune DIAL 5432114686559	Idea	Set Tune DIAL 567895021678
Videocon	Videocon SMS CT 341553 to 543211	BSNL East & S	BSNL E & S SMS BT 5021678 to 56700
BSNL North & West	BSNL N & W SMS BT 804056 to 56700	MTS	MTS SMS CT 10545238 to 55777
vodafone	Vodafone SMS CT 5021678 to 56789	A.P. Maharashtra Goa	Set Tune DIAL 522222779051
TATA	TATA SMS CT 5021678 to 543211	MTNL	MTNL SMS PT 5021678 to 56789
AIRCEL	Aircel SMS DT 804056 to 53000	RELIANCE	Set Tune SMS CT 6312073 to 51234
U.P. Bihar Jharkhand Orissa	Set Tune DIAL 522225021678		

Hey Prabhu Hum Tumse

Download this song on your mobile as Caller Tune

airtel	Set Tune DIAL 5432114686560	Idea	Set Tune DIAL 567895021679
Videocon	Videocon SMS CT 350028 to 543211	BSNL East & S	BSNL E & S SMS BT 5021679 to 56700
BSNL North & West	BSNL N & W SMS BT 804057 to 56700	MTS	MTS SMS CT 10545239 to 55777
vodafone	Vodafone SMS CT 5021679 to 56789	A.P. Maharashtra Goa	Set Tune DIAL 522222779055
TATA	TATA SMS CT 5021679 to 543211	MTNL	MTNL SMS PT 5021679 to 56789
AIRCEL	Aircel SMS DT 804057 to 53000	RELIANCE	Set Tune SMS CT 6312074 to 51234
U.P. Bihar Jharkhand Orissa	Set Tune DIAL 522225021679		

सत्यार्थ प्रकाश ब्रेल लिपि में वितरित

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रजाचक्षु महानुभावों को सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान से अवगत कराने के उद्‌देश्य से महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश का ब्रेल लिपि में अनुवाद करवाया है जोकि अंध विद्यार्थियों के आध्यात्मिक ज्ञान व आर्य साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने व बढ़ाने के लिए एक सराहनीय कार्य है। अभी तक रामायण, महाभारत, कुरान व बाईबल का ब्रेल लिपि में अनुवाद तो किया गया था, लेकिन सत्यार्थ प्रकाश का ब्रेल लिपि में प्रकाशन का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने पहली बार किया है। इसकी कीमत मात्र 2000/- है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा इस पुस्तक की प्रतियां देश के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे अंध विद्यालयों व अंध महाविद्यालयों की लाईब्रेरी में वितरित की जा रही है दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की इस योजना के आप भी सहभागी बन सकते हैं अपने निकटतम अंध विद्यालय में जाकर उनके पदाधिकारियों से मिलकर इस पुस्तक की प्रति उनके संस्थान को भेंट करें। ब्रेल लिपि में सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें- मो. 09540040339

दिल्ली सभा के मंत्री विनय आर्यजी और एम.डी.एच. ग्रुप के श्री अनिल अरोड़ाजी देरघर में नये विद्यालय के निर्माण के सिलसिले में भारत भूषण त्रिपाठीजी एवं अन्य महानुभावों के साथ।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा ...

प्रबंध , मुख्यवक्ता तथा भजनोपदेशक जिनमें आचार्य योगेन्द्र आर्य संयोजक , आचार्य सर्वमित्र आर्य सहसंयोजक , श्री आजादसिंह आर्य प्रबंध , आर्यजगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव, राजेन्द्र विद्यालंकार, प्रोफेसर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र तथा सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सुन्दर पांचाल पलवल, आचार्य रामदयाल आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व कल्याणी आर्या हिसार सभी युवा रहे।

इस सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि परिवहन मन्त्री कृष्णलाल पंवार, श्री विनय आर्य उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, विधायक महिपाल ढाण्ढा, विधायिका रोहिता रेवडी एवं विधायक रविन्द्र माच्छरोली भी उपस्थित रहे।

आर्य महासम्मेलन में मुख्यमंत्री की घोषणा - आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं तथा गोरक्षों पर बने सभी दर्ज मुकदमे होंगे वापिस।

रानी लक्ष्माबाई खेल स्टेडियम की मदद के लिए आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत को २१ लाख की मदद की घोषणा।

परिवहनमन्त्री कृष्णलाल पंवार ने मदद की तथा लड़कियों के आने जाने के लिए अलग बस सुविधाओं के लिए 5 लाख की घोषणा की गई।

मुख्यमन्त्री मनोहरलाल ने आर्य युवा सम्मेलन को बताया महासम्मेलन-

मुख्यमन्त्री मनोहर लाल खट्टर ने आर्य युवा महासम्मेलन में बोलते हुए कहा कि आर्य समाज ने दिलाया भारत को विश्वगुरू का दर्जा, उन्होंने युवाओं को आह्वान किया कि जागो आर्य युवा, वेद संस्कृति को पहचानों अपनी संस्कृति को बचाने के लिए आपसी सभी भेद भुलाकर कार्य करें।

शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने में सरकार प्रयासरत है, उसमें आर्य समाज के योगदान की आवश्यकता है।

उन्होने कहा कि धार्मिक व सामाजिक संगठनों को एकजुट होकर देश भक्ति के सन्देश को नवयुवकों के दिल में उतारना चाहिए। स्वामी दयानन्द जी, वीर सावरकर, स्वामी श्रृद्धानन्द जी, लाला लाजपतराय जैसे महान शख्सियत के कारण ही आजादी का शंखनाद आगे बढ़ा।

डॉ. देवव्रत जी आचार्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विशाल आर्य युवा महासम्मेलन आयोजकों को बधाई देते हुए उनका धन्यवाद किया। उन्होनें महासम्मेलन में उपस्थित युवा -युवतियों से प्रतिज्ञा लेकर जाने को कहा कि जो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने ये प्रमुख चार मुद्दे रखे हैं तथा आह्वान किया कि इन मुद्दों पर कार्य करते हुए प्रदेश में आर्य समाज के संगठन को मजबूत करें।

उन्होंने स्वच्छता, नशामुक्ति, शिक्षा, गोरक्षा आदि अनेक विषयों पर अपने विचार रखे। परन्तु जब उन्होंने देशी गाय पर निर्भर जीरो बजट की खेती पर चर्चा की। तब तो पंडाल में सनाटा-सा छा गया। युवक -युवतियों तथा प्रत्यक्षदर्शी के रूप में आए आर्य समाजों से जुडे व्यक्तियों ने उनकी ओर ध्यान गाड दिया। उन्होने संक्षिप्त से बताया एक देशी गाय दिन में 10 लीटर गोबर व एक लीटर मूत्र हमें देती है। उसको 200 लीटर पानी में घोल दो उसमें 5 किलोग्राम वृक्ष के नीचे की मिट्टी डाल उसे 3-4 दिन तक घोलते रहो और उसको एक एकड़ जमीन में डाल दो इसमें कोई खर्च नहीं आया और एक एकड़ जमीन उपजाऊ हो गई। इसलिए ए गाय से जीरो बजट से 10 एकड़ तक की खेती बिना लागत के की जा सकती है।

डॉ. देवव्रत आचार्य ने जब यह कहा कि आज मै जो कुछ हूँ, आर्य समाज की बदौलत हूँ तो तालियों की गड़गड़ाहट से पंडाल गूंज उठा तथा आए हुए युवक -युवतियों का आर्य समाज के साथ विश्वास ओर पक्का हुआ।

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत की प्रबन्ध समिति के प्रधान आजादसिंह आर्य ने आर्य युवा महासम्मेलन मे उपस्थित अतिथियों तथा युवाओं का अपनी ओर से, स्कूल प्रबन्ध समिति की ओर तथा प्रिंसिपल रेखा शर्मा , निदेश अभय आर्य व समस्त स्टाफ की ओर से धन्यवाद किया।

आर्य महासम्मेलन में प्रमुख व्यक्तियों में आचार्य बलदेव जी, आचार्य विजयपाल जी, मा. रामपाल आर्य, श्री कन्हैयालाल आर्य कोषाध्यक्ष, स्वामी धर्मदेव, स्वामी सोमानन्द, आचार्य ब्रह्मपुत्र नैष्ठिक, आचार्य ऋषिपाल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, श्री धर्मवीर शास्त्री लोहारू, रोशनलाल आर्य, मा. रामनिरंजन, बहन सुमित्रा आर्या, वीरेन्द्र पांढ़ा, उमेदसिंह शर्मा प्रधान आर्य वीर दल हरियाणा, वेदप्रकाश आर्य मन्त्री आर्य वीर दल हरियाणा, उमेद सिंह आर्य प्रधान वेद प्रचार मण्डल झज्जर, डॉ. गेन्दाराम, आचार्य ऋषिपाल, प्रो. दयासिंह, प्रेमचन्द सैनी, रोहतास मलिक , सुधीर मलिक , राजेन्द्र आर्य, सुधांशु आर्य, ईश्वरसिंह कालवा, सतीश कालवा, वीरेन्द्र बुढ़ाखेड़ा, संजीव मुआना, यादवेन्द्र बराड़, दिनेश आर्य, सुनील आर्य, श्रीओम् गोयला, जयपाल कोच, अतर सिंह स्नेही, जगदीश शिवर सिरसा, डा. जगदीश पीडीत गोशाला रोहत, मा. जिलेसिंह आर्य, मा. रायसिंह, मा. सन्तलाल सिरसा, खूबराम आर्य सिरसा, रामकुमार हिसार आदि शामिल रहे।

आर्य महासम्मेलन में युवाओं की उमड़ी भारी भीड़ ने तोड़े सारे रिकार्ड

रानी लक्ष्मीबाई खेल स्टेडियम का उद्घाटन करते मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

Signs of True Wealth

"O resplendent God, may You bless us with that spiritual wealth which is everlasting and which would lead us to victory and peace and protect us from evil impuleses."

"Whereby, we, under your auspices, resolve our internal conflicts and become messenger of peae and prosperity."

Reason and means of acquisition of our wealth should be fair and ideal. We build house, procure clothing and food stuff to keep ourselves safe and secure. But be cannot say that our earnings are out of our own labour without having he cooperation of others. Tose who have put their head and hands with us in our acquisition, surely, have their share in our wealth, Alternatively wealth achieves power and victory which often lead to pride and lust. To win over them is the real conquest of wealth. lastly, it may be remebbered that the means we adopt to collect wealth should be fair and honest because wealth acquired by unfair means never brings us contentment and peace.

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदाहम्।

वर्षिष्ठमूतये भर।। (Rv. I.8.1)-

नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै।

त्वोतासो न्यर्वता।। (Rv. I.8.2)

Endra sanasim rayim sajitvanam sadasaham I

varsistham utaye bhara II

Ni yena mustihatyaya ni vrtra runadhamahai II

tvotaso ny arvata II

Charity

The virtue of charity is eulogized in Vedic texts: "Whatever you have donated and set apart for public good, that will place out in the world of bliss." (Yv. 18.64) "Multiply Your hands to a hundred to collect and multiply the hundred hands to a thousand to distribute." (Ath. v. 3.24.5).

Here a Rigvedic verse states: "Surely, charity elevates a man to the divine, but all are not worthy of being gifted to. The donor has to distinguish between the deserving and the undeserving ones. Those disabled ones, the lame, the blind are to be given a helping hand. Without support and kindness, it is exttremely difficult for them to surevive. The second category of people who deserve donations are those who do never squander away the gifted wealth. There is a group of people who after using the gifted amount, donate the unspent money to more needy persons. They deserve help. Last but not the least, those selfless workers who dedicate their time and energy for the upliftment of education, health, morality and spiritual values of the mass, do also deserve carity."

But giving away money in selfish interest or for gaining name and fame is not considered true charity.

ये वृक्णासो अधि क्षमि निमितासो यतसुचः

ते नो व्यन्तु वार्य देवत्रा क्षेत्रसाधसः ।। (Rv.III.8 .7)-

Ye vrknaso adhi ksami nimitaso yatasrucha I

te no vyantu varyam devatra ksetrasadhasah II

The Evil of Gambling

"Other people caress the wife of him whose wealth the potent dice have swallowed in playing mischief tricks. His mother, father, brothers, all declare:' We know him not, arrest him and take him with you."

A gambler plays games of chance ofr making easy money. He undertakes great risks of loss and chance of profit. The mysterious dice are dear to him as the taste of exhilarating herbs grown on muntains. His desire to earn without toil ultimately ruins him. Sometimes he expresses regret: "I am an old horse. Nobody takes care of me. I am a torn cloth. None needs it. Neighbours make fun of my wife and childeren. My mother mourns for me as I wande homeless sunk deeply in devt."

The gamester, however, suffers from regret when he sees the happy wife, children and well ordered home of others. But in the afternoon, he gets on the town-steeds to repent his act and at night, the sinner lies down near the fire.

Each time he asks for himself: 'Shall I by lucky this time?'

The dice increase his passinon for play and he continues to practise the art of gambling, staking his money against his rival participants. The wife of a gambler is verily like a helpless widow. He himself lies isolated as gambler is verily like a helpless widow. He himself lies isolated as an island in his own house.

अन्ये जायां परि मृशन्त्यस्यगृधद्वेदने वाज्यक्षः।

पिता माता भ्रातर एनमाहुर्न जानीमो नयता बद्धमेतम्।। (Rv.x.34.4)-

Anye jayam pari mrsanty asya yasya grdhad vedane vajy aksah I

pita mata bhratara enam ahur ta janimo nayata baddham etam II

To Be Continued...

प्रेरक प्रसंग

तब आर्यसामाजिक भजनों की धूम मच गई

महर्षि दयानन्दजी गुजरांवाला (पंजाब) पधारे तो उनके प्रवचनों तथा सत्संग से एक प्रतिष्ठित परिवार आर्यसमाज को मिला। इस परिवार के तीन सुयोग्य युवक आर्यसमाज को मिले। इस परिवार के तीन सुयोग्य युवक आर्यसमाज में अत्यन्त पूज्य दृष्टि से देखे जाते थे। तीनों ने अपना सारा जीवन ऋषि-ऋण चुकाने में लगा दिया। ये तीन युवक थे मुंशी केवलकृष्ण, मुंशी जीवनकृष्ण जी और मुंशी नारायण कृष्णजी बालब्रह्मचारी।

यह परिवार मूलत: उत्तर प्रदेश का रहने वाला था। आरम्भ में आर्य समाज में सब वर्गों के भाई आये। डॉ. जे. जोर्डन्सजी का यह कथन अतथ्य है कि पंजाब में ऋषि के प्रभाव से खत्री ही अधिक आर्यसमाजी बने। मुंशी केवल कृष्ण जी कायस्थ कुल में जन्मे थे। तीनों भ्राता जात-बिरादरी सूचक शब्द को नाम के साथ न लगाते थे।

मुंशी केवलकृष्ण जी आर्य समाज के आदि कवियों में से एक थे। तब भक्तराज अमींचन्दजी के और आपके भजनों की आर्यसमाज में बड़ी धूम थी। गली, बाजारों, चौक, चौराहों में सर्वत्र, आर्य लोग आपके भजनों को गाते हुए प्रचार किया करते थे। आपके भजनों को सुन-सुनकर जनता में आनन्द की लहर-सी दौड़ जाती थी।

तब एक ऐसा समय भी आया कि नाचने वाली स्त्रियों ने भी मुंशीजी के भजन गाने आरम्भ कर दिये। अमृतसर में एक राय-बहादुर के पुत्र का विवाह था। उस विवाह में नाचने-गाने के लिए पसरूर (पश्चिती पंजाब से एक लोकप्रिय रकासा-नाचने वाली) बुलाई गई। वह बहुत सुरीला गाती थी। उसने मुंशी केवलकृष्णजी के भजन-सुनाकर सबको मुग्ध कर दिया। मुंशीजी के भजनों की रंगत आध्यात्मिक ही होती थी।

उन्हीं दिनों में नबीबख्श मिरासी भी संगीतविद्या में प्रवीणता रखता था। जब मुंशीजी के कारण राग-रागनियों का मीठा रस बरसने लगा तो मिरासी नबीबख ने भी आर्य समाज के चक्कर काटने आरंभ कर दिये। वह प्राय: मुंशीजी के भक्तिरस से सने भजनों को ही सुनाया करता था।

यह सब-कुछ तड़प रखने वाले और अपनी तड़प से दूसरों को तड़पानेवालों के पुरुषार्थ का फल है कि जिस युग में विवाहों पर वैश्याओं को बुलाना और नाच-गाना करवाना एक फैशन था, इसी में प्रतिष्ठा समझी जाती थी, तब हमारे पूर्वजों की धर्मधुन का यह चमत्कार था कि वैश्याओं की चिह्वा पर भी हमारे प्रभु-भक्ति के गीत चढ़ गये। आज गली-गली में बच्चे सिनेमा के गीत गाते हैं। रेलगाड़ियों में मांगनेवाले सिनेमा के गीत गाते हैं, तो यह सब प्रचार-तन्त्र का प्रभाव है।

यहां यह भी स्मरणीय है कि मुंशी केवल कृष्णजी के भ्राता मुंशी नारायणकृष्णजी के तपोनिष्ठ जीवन व उच्च चरित्र के प्रभाव से प्रिं. श्री साईदासजी, डॉ. गोकुलचन्दजी नारंग, डॉ. दीवानचन्द जी और डॉ. महाराज कृष्ण-जैसे लोग आर्य समाज को प्राप्त हुए। मुंशीजी के वंशज भी बहुत प्रतिष्ठित हैं और अब प्रयाग में रहते हैं।

साभार: तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

शोक समाचार

श्री प्रमोद आर्य उपमंत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी की धर्मपत्नी का निधन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी के उपमंत्री श्री प्रमोद आर्य जी की धर्मपत्नी का दिनांक 4 दिसम्बर 2015 को 50 वर्ष की आयु में आकष्मिक हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया। वे अपने पीछे 2 बेटे व 1 बेटी छोड़ गयी हैं।

हिन्दी व मराठी भाषा में वैदिक साहित्यकार पं. भीमाशंकर जी साखरे का निधन

हिन्दी व मराठी भाषा में वैदिक साहित्य की रचना करने वाले पं. भीमाशंकर जी साखरे का 21 अक्टूबर 2015 को 84 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। श्री साखरे अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती कमलाबाई व दत्तक पुत्र व पुत्रवधू को छोड़ गये। कर्नाटक व महाराष्ट्र के सीमावर्ती इलाके में मराठी, कन्नड़ व हिन्दी भाषा में यज्ञादि कार्यो के माध्यम से वेदप्रचार करने वाले श्री साखरे जी के लेख आर्य जगत् की कई विभिन्न में प्रकाशित होते रहे हैं।

श्री मिठाई लाल जी को पुत्र शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह के पुत्र श्री राजकुमार सिंह का 57 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुषमा सिंह एवं पुत्र समर्थ सिंह व पुत्री मिताली रवीश सिंह को छोड़ गये हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन : अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक -युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं। इसी शृंखला में आगामी 3 माह में जनवरी 2016 से मार्च 2016 के मध्य 13वें, 14वें, एवं 15वें परिचय सम्मेलनों की तिथियां निश्चित कर दी गई हैं।

आपसे निवेदन है कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर प्रोत्साहित करें। **फार्म www.thearyasamaj.org** से डाउन लोड किए जा सकते हैं। फार्म की फोटो प्रति भी मान्य है।

13वां परिचय सम्मेलन (गुजरात)
दिनांक 3 जनवरी, 2016
वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुज.)
अन्तिम तिथि 20 दिसम्बर, 2015
संयोजकः सुरेश चन्द्र अग्रवाल-09824072509
सम्पर्क : श्री हसमुख भाई परमार, मो. 09879333348

14वां परिचय सम्मेलन (म. प्रदेश)
दिनांक 14 फरवरी, 2016
आर्यसमाज रेलवे कालोनी, इन्द्रा नगर, रतलाम (म.प्र.)
अन्तिम तिथि 30 जनवरी, 2016
संयोजक : डॉ. दक्षदेव गौड़-09425907070
सम्पर्क : श्री भगवान दास अग्रवाल मो. 08989467396

15वां परिचय सम्मेलन (ज.-कश्मीर)
दिनांक 27 मार्च, 2016
आर्यसमाज बक्शी नगर, जम्मू
अन्तिम तिथि 10 मार्च, 2016
संयोजक : श्री राकेश चौहान- 09419206881

विशेष जानकारी के लिए राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा, मो. 09414187428 से संपर्क करें।

संस्कृतम्

मम महाविद्यालय

(1. प्रस्तावना, 2. विद्यालयस्य शिक्षा, छात्राणां गुरुणां च संख्यादिकम्, विशेषताश्च, 3. उपसंहार:।)

मम महाविद्यालयो नगराद् बहि: एकान्ते सुन्दरे प्रदेशे स्थितोऽस्ति। महाविद्यालयस्य भवनं निरीक्ष्य चेतो नितान्तं हर्षमनुभवति। महाविद्यालयस्य रमणीयता च न कस्य चेतो बलाद् हरति?

महाविद्यालयोऽस्माकं कृते न केवलं पाठशालाऽस्ति् अपि तु अस्माकं सर्वस्वमस्ति। अस्माभिरत्रैव अध्ययनं क्रियते, सदाचारस्य पाठ: पठ्यते, विनयस्य अनुशासनस्य च शिक्षणं गृह्यते, समाजसेवाया देशभक्तेश्च भावनाऽत्रैव प्राप्यते। किमन्यत्, जीवनस्य यत् कर्त्तव्यमस्ति, तत् सर्वमपि अत्रैव लभ्यते। अतएव महाविद्यालयोऽयम् अस्माकं कृते 'विद्यामन्दिरम्' अस्ति।

मम महाविद्यालयेऽध्यापकानां प्राध्यापाकनां च संख्या पञ्चाशतोऽधिका वर्तते। छात्राणां च संख्या सहस्रादधिका विद्यते। प्राय: शतद्वयी बालिकानामपि संख्या वर्तते। महाविद्यालयस्य आचार्यवर्या अतीव प्रखरा विविधविद्यापारंगता विद्वांस: सन्ति। तेषां तेजोमयं वदनं वीक्ष्य छात्रा: श्रद्धावनता भक्तिभावोपेताश्च भवन्ति। अध्यापकेषु च बहवो महविद्वांस: सन्ति। सर्वेऽपि स्वस्वविषयेऽतीव विशारदा: सन्ति। तेषां शिक्षापद्धतिरपि बहु मनोरमा वर्तते। छात्रा अपि प्रायो व्युत्पन्नबुद्धय: सन्ति। शिक्षाया: समीचीनत्वादेव अन्यप्रान्तेभयोऽपि छात्रा अत्रैवाध्ययनार्थमागच्छन्ति। राजकीयपरीक्षासु च विशिष्टं स्थानम् अस्मद्विद्यालयीया: छात्रा लभन्ते। न केवलं पठने एव छात्रा योग्यतमा: सन्ति, अपि तु क्रीडने तरणे धावने वाक्प्रतियोगितासु अनुशासने संयमे समाजसेवायां देशसेवायामपि च तेषां स्थानं सर्वप्रथममेव विद्यते। अस्माकं महाविद्यालये विद्यार्थिनां क्रीडनार्थं क्रीडाक्षेत्रं सुविस्तृतमस्ति। विविधभाषासु भाषणपाटवार्थं विविधा: परिषद: सन्ति। सैनिक शिक्षाया अपि प्रबन्धोऽस्ति। ये क्रीडानादिषु प्रथमस्थानं लभन्ते, ते पुरस्कारादिकमपि लभन्ते। ये किमपि शोभनं कर्म कुर्वन्ति, ते सदा पुरस्कृता भवन्ति, विद्यालये संमानमादरं च लभन्ते। छात्राणां स्वास्थ्यवद्ध्यर्थं व्यायामस्य, मल्लयुद्धस्य, अन्येषां चोपयोगिवस्तूनां प्रबन्धोऽस्ति, अतएव छात्रा हृष्टा: पुष्टाश्च सन्ति। छात्राणां स्वास्थ्यं निरीक्ष्य सर्वेषामपि जानानां चेत: प्रहर्षमाप्रोति।

साम्प्रतमस्माकमेतत् कर्तव्यं भवति यत् सर्वथा वयं महाविद्यालयस्य कीर्तिं दिक्षु विस्तृतां कुर्याम। एवमस्माकमपि यशो वृद्धिं प्राप्स्यति।

रचनानुवादकौमुदी
(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

ये सच चुभता क्यूँ है?

2013 से लेखकों, ब्लागरो और विदेशी नागरिकों की बेरहम हत्याओं ने बांग्लादेश को खतरनाक देशों की श्रेणी में ला खड़ा किया क्योंकि इन हत्याओं की जिम्मेदारी खुद आतंकी संगठन लेते है और मजहब विशेष को बदनाम कर ये आतंकी संगठन दुनिया पर कौनसी विचारधारा थोपना चाहते है यह कोई नहीं जानता! कई बार तो इनके धार्मिक गुरु ही इन मामलों पर मौन और निशब्द पाए जाते हैं क्यूँ पाये जाते हैं। इस बात का कारण जानना न इतना महत्व नहीं रखता पर विरोध करना मतलब प्राण गवाना। कोई भले ही इसे इनकी मूक सहमति कहता हो! किन्तु मैं इसे सहमति की बजाय भय कह सकता हूँ! "अमेरिका, भारत आस्ट्रेलिया, अब पेरिस सच तो यह है लोग प्रलय से ज्यादा आतंकवाद से डरे हैं।

अमेरिका की जानी-मानी लेखिका और ब्लागर पामेला जैलर अपने देश में बढ़ रही मजहबी मानसिकता के आतंक को लेकर मुखर है। दुनिया भर की जिहादी गतिविधियों पर नजर रखते हुए वे आतंक की बारीकियों को समझने में जुटी हैं। वे कहती है यही लक्ष्य 1400 साल पहले था और यही लक्ष्य आज भी है। तब भी उदारवादी मुस्लिम जगत कट्टरपंथी मुस्लिम जगत से शिकस्त खा रहा था और आज भी वही हाल है। जब कोई आतंकी खुद को उड़ा लेता हैं तो लोग नासमझ बन यही कहते सुनते मिलते हैं कि वह तो बड़ा अच्छा लड़का था? उसका अड़ोस पड़ोस का व्यवहार भी बहुत अच्छा बताया जाता है। आखिर किस तरह वे इस काम में लग जाता है? दरअसल होता यह हैं जब कोई मुस्लिम हद से ज्यादा मजहबी हो जाता है और वह फिदायीन बनने से गुरेज नहीं करता! शायद हिलेरी क्लिंटन ठीक कहती है कि हम इस्लाम से नहीं आतंक से लड़ रहे है, कुरान में ऐसा कुछ नहीं जो रूहानी जिहाद की बात करता हैं?

पामेला जैलर आगे लिखती 9-11 हमला करने वाले आतंकियों ने 90 बार अल्लाह हु अकबर के नारे लगाये थे। कोई मुझे बताये यह आतंकवाद इस्लामिक क्यों नहीं हैं? और अमन शांति के पक्षधर मुस्लिमों को यह सच चुभता क्यूँ हैं? जबकि कुरान की आयत 3:151 की वह आयत क्यूँ नहीं चुभती जिसमें कहा गया हैं कि हम जल्दी ही गेर मजहबी लोगों के दिल में खौफ बरपा देंगे। मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सीसी ने कहा था हम उस मुकाम पर पहुँच चुके हैं जहाँ कट्टरपंथी लोगों ने पूरी दुनिया को खतरे में डाल दिया है? पामेला आगे लिखती है क्या यह बात हजम हो सकती हैं 1.6 अरब मुस्लिम शेष दुनिया की 7 अरब आबादी को मार डाले ताकि सिर्फ मुस्लिम फल फूल सके? पामेला के अनुसार अगर आप मुस्लिम नहीं है तो इस्लामी कानून के तहत आपके सामने तीन रास्ते हैं या तो इस्लाम कबूल कर लो, इस्लामिक झंडा उठाकर लम्बे चौड़े टेक्स चुकाओ मौलवियों की गुलामी में रहो जहाँ आपके कोई बुनयादी अधिकार नहीं है या फिर मर जाओ वह लिखती हैं अमेरिकी नागरिकों का कत्ल हो रहा है और अमेरिका के वाममार्गी इस उम्मीद से खून सनी जमीन को झाड़-पोंछ कर रहे है कि अमेरिका की जनता को कुछ नहीं दिखेगा जिस तरह राष्ट्रपति ने यह भी कहा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि हम कितने ताकतवर हैं और हमारे पास कितनी मजबूत फौज है? अमेरिका अकेले दुनिया की समस्याओं को नहीं सुलझा सकता। मुझे लगता है इसमें मुस्लिम जगत के विद्वानों, विचारकों और मानवता के पक्षधर लोगों को एक मंच पर आकर इस सच को स्वीकार करना होगा कि किसी भी मजहब की दीनी तालीम मानवता के लिए मुक्कमल रास्ते नहीं खोज सकती आज उसकी जरूरत शांति हैं। हम सबने बहुत लड़ाइयों के बारे में सुना देखा जाना। 'आओ अब आगे के इतिहास पर खून की छीटों की बजाय प्रेम और सद्भाव के गीत लिखें। क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपने संबोधन में कहा कि आप अपने विरोधी को जेल में कैद कर सकते हैं, लेकिन विचारों को बंधक बनाकर नहीं रख सकते ? **-राजीव चौधरी**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

14 दिसम्बर से 20 दिसम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17 दिसम्बर/ 18 दिसम्बर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 दिसम्बर, 2015

प्रतिष्ठा में,

कैलेण्डर वर्ष 2016

बढ़िया 130 ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

समाज से रूढ़िवादिता दूर करने की पहल बहन दर्शना मलिक से प्रेरणा लें

गांव भालोठ, जिला रोहतक, श्री जमनादास मंदिर समिति के तत्वावधान में श्री जमनादास जी के जन्मदिवस पर वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बहन दर्शना मलिक जी ने अपने उद्बोधन में उपस्थित जन समूह से अपील की कि यदि हम मृत शरीर पर शाल, चद्दर ओढ़ाने की अपेक्षा उतनी राशि से घी, सामग्री खरीदकर उसके दाह संस्कार पर दें तो हम रूढ़िवादी परम्परा से हट कर पुण्य के भागी बनेगे और वायु प्रदूषण को रोकने में अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं। बहन दर्शना जी के इस प्रेरणादायी विचारा का वहां बैठे सभी नर-नारियों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। समिति के पदाधिकारियों ने यह निर्णय लिया कि इस अनूठी पहल का प्रचार करके समाज से रूढ़िवादी मान्यताओं को हटाकर समाज में नई सोच व दिशा विकसित की जाएगी। बहन दर्शना मलिक जी के विचारों का दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सम्मान करते हुए उन्हें धन्यवाद करती है। हम सबको इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।

आर्य संदेश इंटरनेट पर पढ़े :

www.thearyasamaj.org/aryasandesh

फेसबुक पर हमसे जुड़ें :

margdrashan@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह